लेखा-योग

लेखाविधि का इतिहास | **७६वाँ अंक – फरवरी ’०२ (अगस्त ’०२ में प्रकाशित)**

इस अंक में

इतिहास के पृष्ठों से... १
सन् १४६४ – लुका पोट्चीओहली १
सन् १४५८ – बेनेदेतो कोत्रुग्ली १
आधुनिक अंक एवं लेखाविधि १
इतिहास के कुछ और पृष्ठ... २
बही-खाता प्रणाली २
आचार्य कौटिल्य का अर्थशास्त्र और आज की लेखाविधि – एक विश्लेषण ३
खातों के प्रकार ३
महाभारत में लेखाविधि की एक झलक ४
मध्य एशिया का प्रतीकात्मक लेखाविधि प्रणाली ४

लोगों में यह आम धारणा है कि औद्योगिक क्रांति के साथ ही लेखांकन का श्रीगणेश हुआ। क्या यह सत्य है? आज कल इतिहास की एक नई शाखा विकसित हुई है। इस शाखा के विशेषज्ञों को ‘लेखांकन इतिहासकार’ का नाम दिया गया है। ये पुरातत्विदों (Archaeologist) की तरह ही लेखांकन के इतिहास को खोद रहे हैं।

अकाउंटेबल के इस अंक में हम इन इतिहासकारों द्वारा उजागर किये गए कुछ ऐसे ही तथ्यों की एक झलक प्रस्तुत कर रहे हैं।

इतिहास के पृष्ठों से...

‘दोहरी प्रविष्टि प्रणाली’ (Double Entry System) को आधुनिक लेखाविधि का मुख्य आधार माना जाता है। यह माना जाता है कि इस प्रणाली का वर्तमान स्वरूप, आज से करीब ७०० वर्ष पूर्व यूरोपीय पुनर्जागरण (renaissance) के समय एक इतालवी साधु ने विकसित किया था।

सन् १४६४ – लुका पोट्चीओहली

श्री लुका पोट्चीओहली[१] नामक एक फ्रांसिस्कन[२] साधु ने सन् १४६४ में सर्वप्रथम इस प्रणाली का प्रचार किया। उन्होंने अपनी पुस्तक ‘अंकगणित, रेखागणित, अनुपात एवं अनुपातिकता का संग्रहित ज्ञान[३]’ में इस प्रणाली का वर्णन किया है। इस पुस्तक में मुख्यतः अंकगणित एवं

रेखागणित के विषय पर चर्चा की गई है। केवल एक छोटा सा अध्याय (किसी परिशिष्ट अथवा उत्तरचिंतन के समान) में ‘दोहरी प्रविष्टि प्रणाली’ की चर्चा की है।

यह पुस्तक नई ग्युटेनबर्ग प्रेस[४] पर छापी गयी। इस कारण यह आसानी से उपलब्ध हुई और इसकी ख्याति जल्द ही सारे यूरोप में फैल गई। इस पुस्तक की सफलता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अगले ५०० वर्षों में ‘दोहरी प्रविष्टि प्रणाली’ सारे वाणिज्य जगत में लेखांकन का आधार बन गयी[५]। तब से लेकर आज तक, इस प्रणाली में शायद ही कोई विस्तृत संशोधन हुआ है।

श्री लुका पोट्चीओहली ने स्वयं कभी भी ‘दोहरी प्रविष्टि प्रणाली’ का आविष्कारक होने का दावा[६] नहीं किया। उन्होंने यह सम्मान क्रोएशिया के श्री बेनेदेतो कोत्रुग्ली[७] के नाम किया है।

सन् १४५८ – बेनेदेतो कोत्रुग्ली

श्री कोत्रुग्ली ने दोहरी प्रविष्टि लेखाविधि प्रणाली के बारे में विस्तार से अपनी पुस्तक ‘व्यापार व संपूर्ण व्यापारी[८]’ में चर्चा की। यह पुस्तक लगभग सन् १४५८[९] में लिखी गई थी किन्तु दुर्भाग्यवश यह पुस्तक लिखे जाने के सौ वर्ष बाद ही जाकर प्रकाशित हो सकी।

DELLA MERCATVRA
ET DEL MERCANTE
PERFETTO.
LIBRI QVATTRO
Di M. Benedetto Cotrugli Raugeo.
Scritti gia piu di anni CX.
& hora dati in luce.
Vtilissimi ad ogni Mercante.
CON PRIVILEGIO.
NON SINE SPE
IN VENETIA, all'ELEFANTA.
M D LXXIII.

आधुनिक अंक एवं लेखाविधि

संयुक्त राज्य अमेरिका की चार्टर्ड अकाउन्टेंट्स संस्था – ए.सी.ए.यू.ऐस.[१०] ने दोहरी प्रविष्टि लेखाविधि के विकास पर एक रोचक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका यह मत है कि दोहरी प्रविष्टि लेखाविधि का विकास यूरोप में अरबी अंकों के आने के बाद ही सम्भव हो सका। इस प्रणाली से पश्चिम को पहली बार ‘शून्य’ के विषय में पता चला। यह अंक प्रणाली रोमन अंकों (I, II, III, IV..) से कहीं अधिक सरल एवं उन्नत थी।

आखिर ये अरबी अंक हैं क्या? यह कौन से अंक थे जिनसे इतनी प्रगति हो सकी?

---

[१] Luca Pacioli
[२] ईसाई मत का एक प्राचीन संगठन
[३] मूल शीर्षकः– *‘Summa de Arithematica, Geometria, Proportioni et Proportionalita’*
[४] ‘छपाई मशीन’ के अविष्कार से पहले किताबों की प्रतिलिपि बनाना बड़ा कठिन था। और चूँकि ये हस्तलिखित होते थे, इसलिए ये अधिक महंगे और दुलर्भ भी थे।
[५] विचित्र बात यह है कि लुका पोट्चीओहली गणितज्ञ होते हुए भी गणित जगत में अज्ञात रहे परंतु लेखांकन जगत में विख्यात हो गये!
[६] स्रोतः ‘Accounting: A Virtual History’, www.acaus.org
[७] Benedetto Cotrugli
[८] मूल शीर्षकः– *‘Delia Mercatura et del Mercante Perfetto’*
[९] श्री पोट्चीओहली की पुस्तक से पहले
[१०] ACAUS: Association of Chartered Accountants in the US

आजकल प्रचलित अंको (1, 2, 3...0) को बहुत से लोग अरबी अंक कहते हैं। ये इसलिए अरबी अंक कहलाते हैं क्योंकि प्रथम सहस्त्राब्दी[११] के अंत में यह अरबों के माध्यम से यूरोप में पहुंचे। वास्तव में इन अंकों का उद्गम हिन्दी की *देवनागरी*[१२] लिपि से हुआ है। इस सच्चाई की परख इस तथ्य से भी की जा सकती है कि दोनों लिपियों के अंकों मे काफी समानता है। और तो और, स्वयं अरब इन्हें हिन्दू अंक (अल्-अरकुआन्-अल्-हिन्दू) कहते हैं। ऐसे ही तथ्यों के आधार पर भारतीय संविधान की अनुच्छेद ३४३ में इन्हे '*देवनागरी* अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप' की संज्ञा दी है[१३]।

ये हिन्दू अंक अरब देश कैसे पहँचे? श्री गिन्सबर्ग के अनुसार -

> 'सन् ७७० में उज्जैन के एक विद्वान श्री कंका को, बगदाद के शाह अब्बासिद खलीफा अल्-मंसूर ने अपने दरबार में आमंत्रित किया। माना जाता है कि श्री कंका के द्वारा ही हिन्दू अंक प्रणाली मध्य एशिया पहुँची। श्री कंका ने वहाँ के अरबी विद्वानों को भारतीय खगोलशास्त्र एवं गणित का ज्ञान दिया और साथ ही आचार्य ब्रह्मगुप्त द्वारा रचित 'ब्रह्म स्फुट सिद्धान्त' को अरबी में अनुवाद करने में उनकी सहायता भी की।
>
> फ्रेंच विद्वान श्री एम. एफ. नाउ के अभी-अभी के खोज से भी यह प्रमाणित होता है कि हिन्दू अंक सातवीं शताब्दी के मध्य में सीरिया में भली-भांति प्रचलित एवं सम्मानित थे[१४]।'

इतिहास के कुछ और पृष्ठ...

यह विश्वास किया जाता है कि कोत्रुग्ली की पुस्तक लिखे जाने के करीब सौ वर्ष पहले भी, वेनिस के व्यापारी एवं बैंकर 'दोहरी प्रविष्टि' से मिलती-जुलती लेखाविधि प्रणाली का उपयोग कर रहे थे। कोत्रुग्ली और पोट्चीओहली ने भी अपनी - अपनी पुस्तकों में इस प्रणाली के प्रचलित होने का जिक्र किया है और कभी भी 'एक नई प्रणाली' के अविष्कार की बात नहीं की है। अब सवाल यह उठता है कि यह धारणा वेनिस में इतनी जल्दी इतनी विकसित कैसे हो गई जबकि तभी कुछ समय पूर्व ही आधुनिक अंकों (हिन्दू-अरबी अंक) का यूरोप में आगमन हुआ था[१५]।

कुछ विद्वानों का मत है कि यह ज्ञान भी भारतीय व्यापारियों के द्वारा ही वहाँ तक पहुँची थी। उदाहरणतः, आज से करीब २०० वर्ष पूर्व श्री अलेक्जेन्डर हेमिलटन एफ. आर. एस. ने कुछ इस प्रकार लिखा है-

> 'यह बात गौरतलब है कि भारत के बनियें[१६], दोहरी प्रविष्टि की खाता-बही प्रणाली सदियों से प्रयोग कर रहे हैं। और जब पोट्चीओहली का अभिलेख लिखा गया था तब वेनिस भारतीय व्यापार का गढ़ था[१७]।'

हाल ही में श्री बी. एम. लाल निगम[१८] ने भी कुछ इसी प्रकार का तर्क विकसित किया है। उन्होने भारतीय बही-खाता प्रणाली को पोट्चीओहली की 'दोहरी प्रविष्टि प्रणाली' का अग्रदूत कहा है।

यह बही-खाता प्रणाली क्या है?

बही-खाता प्रणाली

भारतीय व्यापारी आज भी बही-खाता प्रणाली का ही प्रयोग करते हैं। सामान्यतः इस प्रणाली को पाठ्य पुस्तकों में एकल प्रविष्टि प्रणाली (Single-Entry system) बताया गया है। इन पुस्तकों में न तो इस प्रणाली की कोई व्याख्या है और न ही किसी प्रकार की कोई विस्तृत जानकारी दी गई है। फलस्वरूप, आधुनिक लेखाकारों को इस पारम्परिक भारतीय लेखाविधि के बारे में बहुत ही कम जानकारी है।

वास्तव में बही-खाता प्रणाली में भी सभी लेन-देन (वास्तविक या व्यक्तिगत खाता) की दोहरी प्रविष्टि होती है। सभी लेन-देन पहले रोकड़-बही में (Cash-book) तथा बाद में खाता-बही में (Ledger-book) लिखे जाते हैं। इस प्रणाली में खातों के लिखने में भी नामे (debit) और जमा (credit) धारणा का उपयोग किया जाता है। यह प्रणाली, आधुनिक दोहरी प्रविष्टि प्रणाली से निम्न दो पहलुओं में भिन्न है :-

१ जो लेन-देन नामतः खातों (Nominal Accounts) को प्रभावित करते हैं, उन्हें खातों में नहीं लिया जाता है। अतः हम लाभ-हानि खाता[१९] (Profit and Loss Account) नहीं बना सकते।

२ इससे तलपट (Trial Balance) भी नहीं बनाया जा सकता है क्योंकि सभी लेन-देन (जो नामतः खातों को प्रभावित करते हैं) की दोहरी प्रविष्टि पूरी नहीं हो पाती।

यहाँ गौर करने की बात यह भी है कि बहुतः भारतीय व्यापारी आज भी नगदी के आधार पर खाता-बही रखते हैं। उधार-बिक्री होने पर सम्बधित व्यक्ति के खाते को सीधे नामे (Debit) करते हैं। इसके फलस्वरूप,

---

[११] सन् ८००-१००० ई.

[१२] भारतीय भाषाएँ जैसे संस्कृत, हिन्दी, मराठी, इत्यादी की लिपि

[१३] भारतीय संविधान की अनुछेद ३४३ ने इन्हे ' भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप' कहा है। बहुत से भारतीय अनजाने में इन्हे अंग्रेजी अंक कहते हैं।

[१४] गिन्सबर्ग की पुस्तक 'हमारे अंको पर नई प्रकाश', *Bulletin of the American Mathematical Society*, खण्ड २५, १९१६। श्री जी. सी. पाण्डे द्वारा सम्पादित 'द डॉवून् ऑफ इण्डियन सिविलायजेशन' पृ. ६७२-३, (ISBN 81-87586-00-1) में भी उद्धृत।

[१५] यूरोप में आधुनिक अंकों का प्रचलन ई. सन् १४०० के मध्य मे हुआ जब वहाँ अंक-चिन्हो का मानकीकरण हुआ।

[१६] वणिक अथवा व्यापारी। वैश्य वर्ण की तीन मान्य जीविकाओं (कृषि, पशुपालन एवं व्यापार) में से एक। कभी- कभी इस शब्द का प्रयोग अपकर्षक रूप में होता।

[१७] मासिक समीक्षा २६ (१७६८) पृ. १२६, श्री जी. पी. कपाड़िया द्वारा 'हिस्ट्री ऑफ अकाउण्टेंसी प्रोफेशन - खण्ड १', ICAI, १९७३, पृ. २७ में उद्धृत।

[१८] श्री बी. एम. लाल निगम (१९८६) '*Bahi-Khata*: the pre-Pacioli Indian double-entry system of book-keeping', *Abacus*, 22(2): 148-62

[१९] हालांकि 'महाभारत' में भी लाभ-हानि खाता का स्पष्ट विवरण है। (महाभारत, वन पर्व - तीर्थयात्रा पर्व ३, ७, ६८.५-१७) पृष्ठ संख्या १२३३-३४, गीता प्रेस, गोरखपुर. ११वाँ संस्करण, विक्रम सवंत २०५८ (तदानुसार अंग्रेजी वर्ष २००१)

रोजनामचा (Journal) का महत्व कुछ हद तक गौण हो जाता है।

आचार्य कौटिल्य का अर्थशास्त्र और आज की लेखाविधि – एक विश्लेषण

करीब २४०० वर्ष पूर्व, मौर्य सम्राज्य के महामात्य (प्रधानमंत्री) आचार्य कौटिल्य (विष्णु गुप्त) ने 'अर्थशास्त्र' की रचना की थी। राज्य के प्रशासनिक इत्यादि पहलुओं के अलावा, इस रचना का एक भाग राज्य की लेखाविधि प्रणाली की व्याख्या करता है। आश्चर्य की बात है कि अर्थशास्त्र की बहुत सी धारणायें आधुनिक लेखाविधि से बिलकुल संगत है।

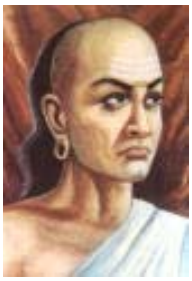

इस बात की चर्चा श्री चौधरी[२०] एवं श्री भट्टाचार्य[२१] ने विस्तार में की है। श्री भट्टाचार्य की पुस्तक की समीक्षा में श्री मेटासिच[२२] लिखते हैं – '...वर्तमान में, लिखित इतिहास के सारे प्रमाणों में से, 'अर्थशास्त्र' लेखाविधि का सबसे पुरातन शोध प्रबंध है...पश्चिम के विद्वानों ने जिन धारणाओं एवं प्रथाओं का २०वीं सदी में विवेचन किया है, अर्थशास्त्र में ये धारणाएं एवं प्रथाएं सहस्त्राब्दीयों पूर्व ही लिखे जा चुके थे। इस प्रकार, आचार्य कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' और श्री पोट्चीओहली की पुस्तक की तुलना कर सकते है। ये दोनो ही पुस्तकें विद्या के इस शाखा की महत्वपूर्ण एवं श्रद्धेय उपलब्धियाँ है।'

श्री भट्टाचार्य के शोध से पूर्णतः सहमत होकर भी श्री मेटासिच उनके विश्लेषण की एक त्रुटि उजागर करते है। श्री मेटासिच के अनुसार, ना तो श्री शामशास्त्री और न ही श्री कांगले[२३] को लेखाविधि मे किसी प्रकार का कोई प्रशिक्षण प्राप्त था। अतः उनकी रचनाएँ, लेखांकन शोध मे कितनी उपयोगी होगीं, यह कहा नहीं जा सकता।

श्री रंगाराजन[२४] ने आचार्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र का एक नया अनुवाद किया है। यह पहले की सारी कृतियों से ज्यादा व्यवस्थित और वैज्ञानिक है। श्री रंगाराजन ने अपनी इस पुस्तक मे एक अध्याय में 'बजट, खाता एवं अंकेक्षण' का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया है। यही नहीं, उन्होने आचार्य कौटिल्य द्वारा निर्धारित खातों[२५] के नमूना का भी पुर्ननिर्माण[२६] किया है। आश्चर्य है कि यह आधुनिक लेखाविधि विवरण से काफी मिलता है!

खातों के प्रकार

आय पक्ष **(२.७.३१)[२७]**

स्थान	लेखांकन अवधि	प्राप्ति की तिथि एवं समय	खाते का शीर्षक	वर्गीकरण: चालू वर्ष का अथवा अदत्त प्राप्य	मात्रा प्राप्त	भुगतान करने वाले का नाम	आदेशकर्ता अधिकारी का नाम	प्राप्तकर्ता का नाम	खाता लेखक का नाम
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०

व्यय पक्ष **(२.७.३२)[२८]**

स्थान	लेखांकन अवधि	भुगतान की तिथि एवं समय	व्यय का शीर्षक	प्रतिकूल मूल्य प्राप्त	व्यय का कारण	भुगतान सामग्री का नाम	भुगतान राशि	किस प्रयोजन से	किसके आदेश से	भंडार-गृह से निकाली गई मात्रा	किसने दिया	प्राप्तकर्ता का नाम
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३

शेष पक्ष **(२.७.३३)[२९]**

स्थान	तिथि एवं समय	खाते का शीर्षक	अदत्त देय	कोषागार में प्राप्त द्रव्य का स्वरुप	गुणात्मकता	मात्रा	द्रव्य रखने के पात्र का विवरण	किसने दिया (कोषाध्यक्ष का नाम)
१	२	३	४	५	६	७	८	९

[२०] श्री एन. चौधरी, (१९८२) 'Aspect of Accounting and Internal Control,- India 4th century B.C.,' *Accountng and Bussiness Research*, 46 ,(spring): 105-10

[२१] श्री ए.के. भट्टाचार्य, (१९८८) '*Modern Accounting Concepts in Kautilya's Arthashastra*' कलकत्ताः फर्मा के. एल. एम प्राईवेट

[२२] श्री रिचर्ड मेटासिच, "Review and extension of Bhattacharya's Modern Accounting concept in Kautilya's Arthashastra", *The Beginning of Accounting and Accounting Thoughts*, 2000, p. 144- 45,ISBN 0-8153-3445-1. '*Acounting, Bussiness and Financial History*, खण्ड-८, संख्या २, १९९८ में भी प्रकाशित।

[२३] श्री आर. शामशास्त्री ने सन् १९१५ ई. में सर्वप्रथम पाण्डुलिपि को खोज कर उसका अनुवाद किया। किन्तु १९६५ मे श्री आर. पी. कांगले द्वारा अनुवादित अर्थशास्त्र ही बाद की सारी समीक्षाओं का आधार बना है।

[२४] श्री एल. एन. रंगाराजन द्वारा सम्पादित *'Kautilya – The Arthashastra'*, १९९२, पेंगविन बुक्स इण्डिया प्र. लि.

[२५] पूर्वोक्तः पृ. २७७. उल्लेखित अनुच्छेद संख्या श्री आर. पी. कांगले द्वारा तीन खण्डों में अनुवादित 'अर्थशास्त्र' (ISBN 81-208-0040-0) का है।

[२६] सम्भवतः उस समय के लेखांकन अभिलेख बिलकुल ऐसे न रहे हों। लेकिन डायनासोर भी तो वैसे नहीं होते होगें जैसा कि ब्रिटिश संग्रहालय में दिखाया गया है।

[२७] व्युष्टदेशकालमुखोत्पत्त्यनुवृत्तिप्रमाणदायकदापकनिबन्धक प्रतिग्राहकैश्चायं समानयेत्

[२८] व्युष्टदेशकालमुखलाभकारणदेययोगप्रमाणाज्ञापकोद्धारकविधातृक प्रतिग्राहकैश्च व्ययं समानयेत्

महाभारत में लेखाविधि की एक झलक

लेखाविधि के पद्चिन्ह अर्थशास्त्र तक ही नहीं जाते अपितु महाभारत में भी इसके संदर्भ हैं। उदाहरणतः, 'आदि पर्व[३०]' में एक रोचक घटना का वर्णन है जो कि आधुनिक लेखाविधि के 'नामतः मूल्य[३१]' (Nominal pricing) सिद्धान्त को दर्शाता है। यह ययाति – वसुमन संवाद[३२] में मिलता है।

राजा अस्तक और राजा प्रतर्दन अपने सुकर्मो द्वारा अर्जित पुण्यों का फल राजा ययाति को दान करना चाहते थे ताकि राजा ययाति शापमुक्त हो जायें। किन्तु राजा ययाति ने उन्हे लेना अस्वीकार कर दिया।

इस पर राजा वसुमान् कहते हैं – 'हे राजन्! मैं अपने सारे पुण्यलोक आप को देना चाहता हूँ। यदि आपको प्रतिग्रह लेने में दोष दिखायी देता हो तो एक मुठ्ठी तिनका मुझे मूल्य के रुप में देकर इन सभी लोकों को खरीद लें।

राजा ययाति कहते हैं – 'हे राजन्! यह क्रय – विक्रय तो पूर्णतः मिथ्या है। मैंने कभी भी ऐसा व्यवहार नहीं किया है और जिसे पूर्ववर्ती अन्य महापुरुषों ने नहीं किया, वह कार्य मैं भी नहीं कर सकता; क्योंकि मैं सत्कर्म करना चाहता हूँ।'

मध्य एशिया का प्रतीकात्मक लेखाविधि प्रणाली

क्या हमारी खोज महाभारत तक जाकर रुक जायेगी? बिलकुल नहीं! इतिहासकार इस यात्रा में अब हमें मेसोपोटामियाँ ले जाते हैं। पुरातत्विदों को यहाँ अति प्राचीन टिकिया मिले हैं जिन पर 'जौ' के वितरण के आलेख हैं। इन टिकियों के एक तरफ नामे प्रविष्टि तथा दूसरी तरफ सारी जमा प्रविष्टियों का जोड़ अंकित है।

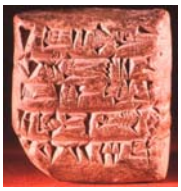

माना जाता है कि इस प्रकार की लेखाविधि, प्रतीकात्मक लेखाविधि प्रणाली के बाद विकसित हुई प्रणाली थी। पुरातत्विदों का मानना है कि प्रतीकात्मक लेखाविधि प्रणाली सन् ८००० से ३००० ईसापूर्व, मध्य एशिया में विकसित हुई थी।

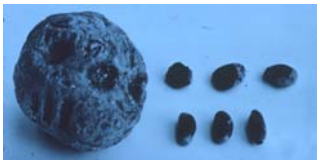

प्रतीकात्मक लेखाविधि प्रणाली में मिट्टी की गोलक[३३] के अंदर सांकेतिक चिन्ह (स्मृति चिन्ह) जैसे कि गोटी, छोटे-छोटे पत्थर इत्यादि को बंद करते थे। प्रत्येक सांकेतिक चिन्ह वास्तविक वस्तु को वर्णित करती है। जैसे कि एक गोटी का मतलब १० बकरी या भेड़ हो सकता है। तदनुसार, ५० बकरी दर्शाने के लिए, ५ गोटीयों को एक मिट्टी के गोलक में बंद करके, फिर सुखाकर उसे आग में पकाया जाता है। अगर आपको पता लगाना है कि भंड़ार में कुल कितनी बकरीयाँ है तो आपको गोलक को तोड़कर गोटीयों की गिनती करनी होगी।

बाद में, जब यह प्रणाली थोड़ी और विकसित हुई तब लेखाकार गोलक को पकाने से पहले, उसपर भी बाहर से गोटीयों के छाप बनाने लगे। ऐसा करने का मुख्य लाभ यह हुआ कि अब खातों को परखने के लिए गोलकों को तोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं रही! इस दोहरे प्रतिनिधित्व (एक गोटी मिट्टी की गोलक के अन्दर और इसकी छाप थैली के बाहर) को ही दोहरी प्रविष्टी प्रणाली का प्रेरणा स्रोत माना जाता है।

लेखा·योग क्या है – 'मानक हिन्दी कोश' के अनुसार योग के कम से कम ४० अर्थ होते हैं। गणित में योग का अर्थ है 'दो संख्याओं को जोड़ना'। आध्यात्मिक रूप से योग का अर्थ तपस्या अथवा साधना होता है। श्रीमद्भगवद् गीता में निष्काम कर्म को ही योग बताया गया है। लेखा-कर्म में यह तीनों भाव अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यदि लेखाकार लेखा लिखने और योग लगाने में योगफल की चिन्ता न करें तो अवश्य ही संस्थाओं के हिसाब-किताब में सुधार होगा। लेखा·योग का यही उद्देश्य है।

लेखा·योग (AccountAble™) हर माह प्रकाशित होता है। इसमें जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखाविधि प्रणाली से सम्बन्धित, विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाती है। यह विभिन्न जन-सेवी संस्थाओं, दाता संस्थाओं व अङ्केक्षण प्रतिष्ठानों (ऑडिट फर्म्स) में लगभग १,२०० व्यक्तियों को वितरित किया जाता है। लेखा·योग के प्रत्युत्पादन या पुनर्वितरण को अकाउण्टएड इण्डिया प्रोत्साहित करता है, यदि ऐसा अव्यवसायिक उद्देश्य से किया जाए एवं इनके स्रोत को अभिस्वीकार किया जाए।

आंग्ल भाषा में लेखा·योग – This issue of Lekha-Yog is available in English as AccountAble.

लेखा·योग का वाभ-स्वरूप – लेखा·योग के सभी पुराने अङ्कों का आंग्ल संस्करण (AccountAble) हमारे वाभ-स्थल www.AccountAid.net पर उपलब्ध हैं। इनका हिन्दी वाभ-स्वरूप कुछ समय पश्चात् प्राप्त हो सकेगा।

अकाउण्टएड कैपस्यूल्स – जन-सेवी संस्थाओं के नियमन व लेखाविधि प्रणाली से सम्बन्धित, विभिन्न विषयों पर छोटी-छोटी परन्तु महत्वपूर्ण जानकारी के लिए अकाउण्टऐड कैपस्यूल्स आंग्ल भाषा में उपलब्ध हैं। इस सुविधा के लिए कृपया accountaid-subscribe@topica.com पर ई-डाक भेजें।

अपने प्रश्न व सुझाव हमें इस पते पर भेजें: अकाउण्टएड इण्डिया ५५-ए, पॉकेट-सी, सिद्धार्थ विस्तार, नई दिल्ली – ११० ०१४ दूरभाष : ०११ – २६३४ ३१२८, २६३४ ६१११; प्रतिरूप प्रेषिका : २६३४ ३८५२, ई-डाक : accountaid@vsnl.com

© AccountAid™ India अगस्त, ई. सन् २००२; भाद्रपद विक्रम संवत् २०५९

---

[२९] व्युष्टदेशकालमुखानुवर्तनरूपलक्षणप्रमाणनिक्षेपभाजनगोपायकैश्च नीवीं समानयेत्

[३०] यह माना जाता है कि महाभारत का युद्ध सम्भवतः सन् १४०० ईसापूर्व के आस-पास हुआ था। आदि पर्व काल इससे और पहले का है।

[३१] नामतः मूल्याकंन को समझने के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है। भारतीय ट्रेड फेयर प्राधिकरण ने प्रगति मैदान से उसकी ज़मीन १ रु. मूल्य मे खरीदा जबकि उसका असली मूल्य करोड़ों रुपये से कम नहीं होगा !

[३२] 'वसुमानुवाचः... क्रीणीष्वैतांस्तृणकेनापि राजन् प्रतिग्रहस्ते यदि धीमन् प्रदुष्टः।। ययातिरूवाचः न मिथ्याहं विक्रयं वै स्मरामि वृथा गृहीतं शिशुकाच्छङकमानः।...' 'महाभारत', (१, ७, ९३.३-४) पृष्ठ संख्या २८०.

[३३] जिन्हे स्थानीय भाषा में 'बुल्ला' कहते थे।